IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में प्रासंगिकता

डॉ० हरेन्द्र कुमार शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, महाराजा सूरजमल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भरतपुर (राज०)

परिचय–

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है । प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थी । प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था।

स्वामी जी का दर्शन, चिंतन, विचार और उनके आदर्श भारतीय युवकों के लिए प्रेरणा का बहुत बड़ा स्रोत है। उनका शैक्षिक दर्शन भी अत्यंत प्रेरणादायक तथा प्रभावी है। आज के समय में उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उनके शिक्षा संबंधी विचारों में प्राचीन भारतीय मूल्यों, आदर्शों और आधुनिक पश्चिमी मान्यताओं का समावेश है। स्वामी विवेकानंद के लिए कहा भी गया है– स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के निर्माता हैं तथा 'यदि आप भारत को जानना चाहते हैं तो विवेकानंद को पढ़िए'।

पृष्ठभूमि–

स्वामी जी के विचारों को वर्तमान संदर्भ में देखें तो स्पष्ट होता है कि शिक्षा मनोविज्ञान का जो आज उद्भव और विकास हुआ है, वह स्वामी जी के विचारों के पूर्णतःअनुकूल है वह केवल पुस्तकों के ज्ञान को शिक्षा नहीं मानते, केवल पोथियाँ पढ़ लेना शिक्षा नहीं है, ना ही अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने का नाम शिक्षा है। केवल डिग्रियां लेना शिक्षा नहीं है। स्वामी जी के विचार बालकों का मनोबल बढ़ाते हैं, उनका मानना था अपने को कभी कमजोर ना समझे अपना हाथ में विश्वास बनाए रखें।

उनके शब्दों में

"जो तुम सोचते हो वह हो जाओगे, यदि तुम खुद को कमजोर सोचते हो, तुम कमजोर हो जाओगे, अगर खुद को ताकतवर सोचते हो, तुम ताकतवर हो जाओगे।

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा सूचनाओं एवं जानकारी को भरना नहीं है, बल्कि उन जानकारीयों का जीवन में सही प्रयोग करना है। सीखे गए ज्ञान का जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उचित प्रयोग वास्तव में शिक्षा है। हमें उसे शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति में वृद्धि होती है, बुद्धि विकसित होती है, जिसको प्राप्त करके व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। स्वामी जी ने आजीवन इस बात पर बोल दिया कि "अपने ऊपर विश्वास रखना, श्रद्धा तथा आत्मत्याग की भावना को विकसित करना शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। "उत्तिष्ठत

जाग्रत प्राप्य वरान्यबोधत"। उनके शब्दों में उठो, जागो और उस समय तक बढ़ते रहो, जब तक की चरम उद्देश्य की प्राप्ति ना हो जाए"।

स्वामी जी के शब्दों में "नागरिकों को महान बनाने के लिए उनका नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास परम आवश्यक है" अतः शिक्षा को इस ओर ध्यान देना चाहिए। नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से विहीन शिक्षा प्रणाली किसी भी समाज को अवनति की ओर ले जा सकती है। इसलिए स्वामी जी ने अनिवार्य रूप से शिक्षा में गीता, उपनिषद और वेद में निहित नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश की आवश्यकता पर बल दिया है।

वर्तमान में शिक्षा मौलिक अधिकार है, लेकिन स्वामी जी के समय शिक्षा जनसाधारण को सुलभ न थी, किंतु स्वामी जी का विचार था कि शिक्षा का प्रचार जनसाधारण में होना चाहिए। बालक– बालिकाओं को समान शिक्षा मिलनी चाहिए। वे सार्वभौमिक शिक्षा के समर्थक थे। वर्तमान में भी हम यही मानते हैं कि देश का संपूर्ण विकास तभी होगा, जब सभी शिक्षित होंगे।

अंततः स्वामी जी ने शिक्षा के उद्देश्य में शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, व्यावसायिक तथा भेदभाव रहित सार्वभौमिक शिक्षा का समर्थन किया है तथा मानव के व्यक्तित्व निर्माण को प्राथमिकता दी है। उन्होंने व्यावहारिक और आधुनिक दृष्टिकोण अपनाते हुए प्रौ ाोगिकी, वाणिज्य, उ ाोग, विज्ञान से जुड़ी पश्चिमी शिक्षा को भी महत्व दिया है।

स्वामी जी का शैक्षिक दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। जिसका अनुसरण कर वर्तमान समाज की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

निष्कर्षः स्वामी विवेकानंद को कभी–कभी कर्मयोगी कहा जाता है, जो सर्वथा उपयुक्त है, उन्होंने अपनी शिक्षाओं को अपने जीवन से सिद्ध किया, उन्होंने आध्यात्मिक चेतना का मार्ग चुना और इस भौतिक जगत में दूसरों के मानसिक और शारीरिक कष्टों को दूर करने का प्रयास किया।

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता आज इस बात में है कि उन्होंने युवाओं के लिए आदर्श और लक्ष्य निर्धारित किए, उन्होंने इन लक्ष्यों को भौतिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक अन्वेषणों के जरिए हासिल करने के वैज्ञानिक मार्ग का सूत्रपात भी किया।

जिम्मेदारी अब युवाओं पर है कि वे स्वामी विवेकानंद द्वारा बताए गए मार्ग पर चलें और भारत को फिर से विश्व गुरु बनाने के उनके सपने को साकार करें। युवाओं के लिए यह उचित समय है कि वह अपना भय दूर करने के लिए आगे आएं, जैसा कि विवेकानंद जी ने कहा था और क्षणभंगुर को सशक्त, बीमार को स्वस्थ, कमजोर को ताकतवर बनाने बनाते हुए तथा अस्थिरता के स्थान पर स्थिरता और निरर्थक को सार्थक बनाते हुए भारत के निर्माण का बीड़ा उठाएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नैर, वी. एस.: "स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार" केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेंद्रम 1980
2. शर्मा रामनाथः भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1971
3. पुथियथ जे.डी.: 'स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन' बंबई विश्वविद्यालय, बंबई 1978